छापबे बारी
निरमान सुसाइटी
www.brajbhasha.org.in

रिस्तेन की
सिलाई अगर
भावनान ते हुई है,
तो टूटनौ
मुस्किल है और
अगर स्वार्थ ते हुई
है तो टिकनौ
मुस्किल है।

बिरज भासा की उन्नति और विकास

लाड़ली पतरिका

जुलाई ते सितम्बर 2021

nirmaan
empowering communities

प्रधान मंत्री श्रम योगी मान-धन पेंसन योजना

• स्वैच्छिक और अंसदायी पेंसन योजनाएं

• लाभ लैबे बारे की उम्र के आधार पै मासिक अंसदान 55 रूपईया ते लेकें 200 रूपईया तक रहबै है।

• या योजना के अनुसार, लाभ लैबे बारे ऐ हर महिना 50% अंसदान देय है और केन्द्र सरकार ते यामै बराबर कौ योगदान दियौ जाबै है।

लाभ लैंबे बारे की योग्यता

• लाभ लैबे बारौ भारतीय होनो चहियै।

• असंगठित कामगार(फेरी बारे, खेती संबंधी काम, काम करबे बारे मजदूर, चमड़ा कारोबार में काम करबे बारे, हतकरघा, मिड-डे-मील, रिक्सा या टम्पू चलाबे बारे, कूड़ौ बीनबे बारे, बढ़ई, मछुआरे या तरह के काम करबे बारे कामगार)

• 18 ते 40 साल की उम्र हैनी चहियै।

• महिना की आमदनी 15000/- रुपईया ते कम हैनी चहियै और EPFO/ESIC/NPS (सरकारी वित्त पोषित) स्कीम कौ सदस्य ना हो।

या योजना के लाभ

• 60 साल की उम्र पूरी करबे के बाद, लाभ लैबे बारौ कम ते कम 3000/- रुपये की हर माह पेंसन लैबे को हकदार है।

• लाभ लैबे बारे की मौत है जाबे पै, पति या पत्नि 50% हर माह पेंसन लैबे काजैं योग्य हैं।

• यदि पति और पत्नि, दोनों या योजना में सामिल हैमै हैं, तो वे मिलकें 6000/- रुपये हर माह पेंसन लैबे काजैं योग्य हैं।

सुविचार

• सोच को ई फरक हैबै है, वरना समस्याएं तुमै कमजोर नाय बल्कि मजबूत बनाबे आमैं हैं।

• अकेले हैं तौ विचारन पै काबू रखौ और सबके संग हैं तो जुबान पै काबू रखौ।

• किरन चाहे सुरज की हो या फिर आसा की जीवन के सब अंधकार ऐ मिटा दैबै है।

गरम जामुन

बहौत टैम पहले की बात ऐ, सुंदरवन में सेतू नाम कौ एक बूढ़ौ खरगोस रहबे हो। बू इतनी अच्छी कविता लिखौ कि सारे जंगल के पसुपक्षी उन्नै सुनकैं बहौत खुस हैबे और विदमान तोता तक उन्नै लोहा मानै हो।

सेतू खरगोस नै सासतार्थ में सुरीली कोयल और विदमान मैना तक हरा दियै। याई कारन जंगल कौ राजा सेर भी बाकौ आदर करेकरौ। पुरे दरबार में बा जैसे विदमान कोई ना हो। धीरें-धीरें बाऐ अपनी विदमानी पै बड़ौ घमंड हैगौ।

एक दिना बू सवेरे-सवरे खाबे की तलास में निकरौ। बरसात के दिना ऐ, कारे बादर छाबे ही लगे। मोसम की पहली बारिस हैबे ई बारी। सड़क के किनारे जामुन के पेड़ कारे-कारे जामुनन ते झुके पड़े। बड़े-बड़े कारे रसीले जामुनन नै देखकें सेतू के मौंह में पानी भर आयौ।

एक बड़े से जामुन के पेड़ के नीचे जाकैं बाने ऊपर देखो तो नन्हें तोतान कौ एक झुंड जामुन खातौ दिखाई दियौ। बुढ़े खरगोस नै नीचे ते आवाज दई, “प्यारे नातियों मेरे काजैंऊ थोड़े से जामुन गिरा देयौ।”

उन तोतान में मिठ्ठू नाम कौ एक तोता बड़ौ सरारती और मजाकिया हो। बू उपर ते बोलो “दादा जी यह बताओ आप गरम जामुन खायेंगे या ठंडी?”

बेचारौ बूढ़ौ सेतू खरगोस हैरान हैकैं बोलो”भला जामुनऊ कहीं गरम हैमैं हैं? चलौ मोते मजाक मत करौ मोय थोड़े से जामुन दै देयो।

मिठ्ठू बोलो “अरे दादा जी आप तो ठहरे बड़े विदमान यह भी ना जानै कै जामुन गरम भी हैमै हैं और ठंडे भी। पहले यह बताओ आप ऐ कैसे जामुन चहियैं ये जाने में ना दुंगौ।

बुढ़े और विदमान खरगोस ऐ कछु समझ ना आरौ और बू रहस्य जानबे काजैं बोलो “बेटा तुम मोय गरम जामुन ही खिला देयो ठंडे तो मैने बहौत खाये हैं।

नन्हें मिठ्ठू ने बुढ़े की बात सुनकैं जामुन की एक डारी ज़ोर ते हिला। पके-पके जामुन नीचे धूर में बिछ गये। बूढ़ौ सेतू खरगोस उन्हें उठाकैं धूर फूंक-फूंक कैं खाबे लगौ। यह देखकें नन्हें मिठ्ठू ने पूछौ, “क्यों दादा जी जामुन खूब गरम हैं?”

सेतु खरगोस नै कहौ बेटा यह तौ सादा ठंडे जामुन ही तो हैं। नन्हें मिठ्ठू तोते ने चौंक कर पूछौ,”का कही ठंडे हैं? तो फिर आप इन्नै फूंक-फूंक कर क्यों खा रहे हैं। या तरै ते तौ सिर्फ गरम चीजें ई खाई जामै हैं।

नन्हें मिठ्ठू तोते की बात कौ रहस्य अब जाकैं बूढ़े खरगोस की समझ में आयौ और बू बड़ौ सरमिंदा हुऔ। की इतनौ विदमान बूढ़ौ सेतू खरगोस जरा सी बात में छोटे से तोते के बच्चे ते हार गयौ। और बाकौ घमंड दूर हैगौ फिर बाने एक कविता लिखी-

खूब कड़ा तनौ सीसम कौ, बड़े कुल्हाड़े ते कट जाबै।

लेकिन बोई कुल्हाड़ौ, कोमल केला ते घिस जाबै।

सच ऐ कभऊ-कभऊ छोटे भी, ऐसी बड़ी बात कहमे हैं।

बहौत बड़े विदमान मुनी भी,अपनौ सिर धुनबे लग जामै हैं।

भजान

टेक- बिरज के सूने परे गिरारे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

बागन-बागन फिरुं अकेली बागन के लगरे तारे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

बिरज के सूने परे गिरारे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

महलन-महलन फिरुं अकेली अरी महलन के लगरे तारे रे

मेरे कितकूं गये वंसी बारे रे

बिरज के सूने परे गिरारे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

मन्दिर-मन्दिर फिरुं अकेली मन्दिर के लगरे तारे रे

वामें मिलगे वंसी बारे रे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

बिरज के सूने परे गिरारे मेरे कितकूं गये वंसी बारे

चुटकला

एक समुन्दर के किनारे तीन आदमी फसगे। जिनमें एक अनिल, एक साहुन और एक पवन। तीनों जने याई सोच मेंए कै घर तक कैसैं पौंहचौ जाय। अनिल नै हिम्मत दिखाई और तैरतौ हुयौ आदी कोस तक गयौ और हैरान हैबे की बजै ते डूबकैं मरगौ। फिर साहुन नै सोची मैंऊ कोसिस करकैं देखूं। ऊ आदे कोस ते नैक जादा तक तैरकैं गयौ और डूबकैं मरगौ। दोनून के जाबे ते पीछैं पवन बचगौ तौ बानै सोची अब मैं अकेलौ काह करुंगौ। या बातै सोचकैं बानै भी पानी में छल्लांग लगा दी। आदी कोस तैरबे ते पीछैं बानै सोची अब मैं हैरान हैगौ आगैं जाऊंगौ तौ डूब जाऊंगौ या बातै सोचकैं पवन हैटौ आगौ।

सम्पर्क

निरमान सुसाइटी

सहारई रोड़, तहसील-डीग, जिला-भरतपुर,
राजस्थान-321203, मोबाईल नं. 8696208682

बेबसाइट: www.brajbhasha.org.in,
www.nirmaan.org.in

ई-मेल: rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
info@nirmaan.org.in